साल में एक बार बासौड़ा खाकर माता पूज लो। खसरे का टीका लगवाने की क्या ज़रूरत है। बिल्ली रास्ता काट गई या किसी ने छींक दिया तो रुक जाओ, चाहे गाड़ी छूट जाए। पेट में दर्द है तो गर्म लोहे के सरिए से डाम लगा दो, डाक्टरी-दवाई की क्या ज़रूरत है।

जाल में फंसे

पता नहीं कब तक हम इन अंधविश्वासों के जाल में फंसे रहेंगे और अपना नुकसान करते रहेंगे। यह सच है कि कई पुराने घरेलू नुस्खे, दादी-नानी की दवाइयां बहुत अच्छी हैं। छोटी-मोटी बीमारियों में पहले हमें इन्हें ही आजमाना चाहिए। चाहे अदरक-तुलसी हो या अजवैन-काला नमक, सब जानी पहचानी फ़ायदेमंद चीजे हैं। लेकिन गोबर लगाना, मिर्ची की धूनी देना, मारना-पीटना या डाम लगाना बीमारी का इलाज नहीं है।

गांव की बड़ी-बूढ़ी दाइयों और वैद-हकीमों की हमें आज भी ज़रूरत है। लेकिन टोने-टोटके करने वाले ओझा और झाड़-फूंक करने वाले भोपों की कोई ज़रूरत नहीं है।

कोदरी बाई

राजस्थान के बांसवाड़ा जिले के एक गांव में रहती थी कोदरी बाई। उम्र थी करीब चालीस साल। कोदरी बाई के कोई बच्चा नहीं था। वह आराम से अपने पति के साथ रहती थी। कोदरी बाई का पति कचरू भाई अनपढ़ था। उसका देवर खेमराज स्कूल में मास्टर था।

कुछ दिन से कोदरी बाई की तबीयत खराब थी। उसे सांस लेने में तकलीफ हो रही थी। डाक्टर का इलाज चल रहा था। लेकिन उसी बीच अपने अंधविश्वास की वजह से कोदरी बाई भोपे के पास गई। उसने सोचा भोपा उसे जल्दी ठीक कर देगा। भोपा कुछ मंत्र पढ़ता, कुछ पानी छिड़कता और फिर दोबारा आने को कहता। कोदरी बाई उसके पास दो बार हो आई थी। भोपा ने उसे फिर अगले रविवार को बुलाया।

आखिरी रविवार

हमेशा की तरह जब कोदरी बाई भोपा के पास गई तो वहां जाकर लेट गई। कोदरी बाई की एक सहेली भी साथ गई थी। वह भी पास बैठ गई। भोपा ने कोदरी बाई के पेट पर एक नीबू रखा। उस नीबू पर टिकाई एक तलवार और पढ़ने लगा कोई मंत्र।

भोपा का नाटक चल ही रहा था कि जिस पाटिए पर भोपा बैठा था वह खिसक गया। इधर पाटिया खिसका, उधर भोपे का हाथ हिला। नीबू तो गिरा एक तरफ और तलवार धंस गई पेट में। एक झटके में कोदरी बाई बैठ गई। वो दर्द के मारे चिल्लाई। तलवार बाहर खींची तो हाथ भर ऊंची खून की फुहार निकल पड़ी।

ज़ालिम भोपा

इतनी बड़ी गड़बड़ी करने पर भी भोपा कोदरी बाई को अस्पताल नहीं ले गया। अपनी गलती मान लेता तो उसके पास इलाज के लिए कौन आता। उसने इतने भारी घाव पर सिंदूर लगा दिया और बोला सब ठीक हो जाएगा।

भोपा अब दूसरे मरीजों को बुद्धु बनाने में लग गया। इधर कोदरी बाई के पेट से भलभल खून बहता जा रहा था। उसकी सहेली दौड़कर एक जानकार को ले आई। दोनों मिल कर कोदरी बाई को गांव लाए। गांव के डाक्टर ने कहा—'हालत बहुत बिगड़ चुकी है शहर के अस्पताल ले जाओ, खून चढ़ाना पड़ेगा।'

कोदरी बाई सिधारी

बेचारे कचरू भाई का तो चिंता के मारे बुरा हाल। कोदरी बाई का देवर टैक्सी लाने के लिए दौड़ा! जब तक टैक्सी आई कोदरी बाई के प्राण

छूट गए। सारा गांव गुस्से से भर गया। अच्छी भली कोदरी बाई कैसे मर गई। एक छोटी-सी बीमारी का इलाज कराने गई तो जान भी नहीं बची।

पुलिस में रपट लिखाई। कोदरी बाई के शव की चीर-फाड़ हुई। फिर घरवालों ने शरीर का क्रिया-कर्म कर दिया। पुलिस ने भोपा को गिरफ्तार कर लिया।

मुकदमा चलेगा, लेकिन क्या कोदरी बाई का जीवन लौट सकता है? भोपा सिर्फ एक तो नहीं। गांव-गांव में कितने भोपे रोज लोगों के जीवन के साथ खिलवाड़ कर रहे हैं। लोग उनके पास जाते हैं तभी उनकी दुकानदारी चलती है।

हमारे शरीर की कितनी बीमारियां ऐसी हैं जो बगैर दवाई के कुछ समय में अपने आप ठीक हो जाती हैं। उन रोगों की मियाद कम होती है। हमारे शरीर में भी रोग से लड़ने की ताकत होती है। बस ऐसे ही जो लोग ठीक हो जाते हैं वे सोचते हैं भोपे के मंत्र-जादू ने ठीक किया है। इस तरह यह अंधविश्वास बढ़ता जाता है।

हम सबको अपने आपसे सवाल पूछना चाहिए—जो कोदरी बाई के साथ हुआ क्या वह हमारे साथ नहीं हो सकता?

(साथिन रो कागद, बांसवाड़ा पर आधारित)